राष्ट्रियपण्डित (राष्ट्रपति-पुरस्कृत) श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी के द्वारा

संपादित (स), अनूदित (अ) एवं रचित (र) ग्रन्थ

देश एवं विदेश के विद्वानों की संमतियाँ
एवं
प्राप्त पुरस्कार

(स) प्राचीनं निर्णयपत्रम्---- (धर्मशास्त्र) लखनऊ के रेजीडेंट के द्वारा प्रेषित वादपत्र का ई.इ. कम्पनी द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला के विद्वानों का समाधान, सारस्वती सुषमा, व. 6, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) पथिकजनपातकचिन्तनस्मृति—— (यात्रावर्णन) महेश भट्ट विरचित। नादिरशाह के कत्लेआम का आँखों देखा विवरण भी। सा. सु., व. 7, अ.2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) प्रत्यङ्गिरासूक्त—— पिप्पलाद शाखीय, वासुदेवद्विवेदविरचित व्याख्यान सहित। सा. सु., व 7, अ. 3-4.

(स) काण्वसंहिताभाष्यसंग्रह—— आनन्दबोध भट्टोपाध्याय विरचित। 31-40 अध्याय । सा. सु., व. 7, अ.2 से व. 9, अ. 2 पर्यन्त ।

(स) भारोत्थापनयन्त्रनिर्माणविधि—— (शिल्पशास्त्र) देवीसिंह महापति विरचित। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित प्राक्कथन । सा. सु., व. 12 अ. 2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) गैरिकसूत्र—— (कला) गंगाराम जड़ी विरचित। पं. रघुनाथ शर्मा द्वारा विरचित विवरण सहित। सा. सु., व. 12, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) नित्याषोडशिकार्णव—— (त्रिपुरा तन्त्र) शिवानन्द की ऋजुविमर्शिनी और विद्यानन्द की अर्थरत्नावली नामक टीकाओं के साथ । यहाँ परिशिष्ट भाग में दीपकनाथ सिद्ध कृत त्रिपुरसुन्दरीदण्डक का, शिवानन्द कृत सुभगोदय, सुभगोदयवासना और सौभाग्यहृदयस्तोत्र का तथा अमृतानन्द कृत सौभाग्यसुधोदय एवं चिद्विलासस्तव का भी प्रकाशन हुआ है। 120 पृष्ठ के संस्कृत उपोद्घात एवं टिप्पणी आदि के साथ इसका प्रकाशन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में हुआ है । इसको उत्तरप्रदेश प्रशासन का कालिदास पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 1967 ई. में प्रथम तथा सन् 1984 द्वितीय संस्करण ।

(स) महार्थमंजरी—— (शाक्त क्रमतन्त्र) महेश्वरानन्द कृत स्वोपज्ञ व्याख्या के साथ, संस्कृत उपोद्घात एवं परिशिष्टों से संयुक्त। सं. सं. वि. वि., वाराणसी, 1972 में प्रथम तथा 1992 ई. द्वितीय संस्करण ।

(स) शक्तिसंगमतन्त्र, चतुर्थ खण्ड—— (शाक्त तन्त्र)। विस्तृत संस्कृत उपोद्घात तथा परिशिष्ट आदि से संयुक्त, गायकवाड़ शोध संस्थान, बड़ोदरा (गुजरात) से सन् 1978 में प्रकाशित ।

(अ) विज्ञानभैरव—— (काश्मीर का योगशास्त्र) । अन्वयार्था नामक संस्कृत टीका तथा रहस्यार्था नामक विस्तृत हिन्दी व्याख्या से संयुक्त। विस्तृत हिन्दी उपोद्घात तथा परिशिष्ट के साथ। मोतीलाल बनारसी दास, प्रथम संस्करण, सन् 1978, द्वितीय 1984 ई.। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत ।

(अ) वेदार्थपारिजात—— (शुक्ल यजुर्वेद) अनन्तश्री स्वामी करपात्री जी महाराज विरचित भाष्यभूमिका का हिन्दी अनुवाद । 1979-1980 ई. ।

(स) तन्त्रसंग्रह, चतुर्थ भाग—— सर्वविजयी-गुप्तसाधन-माया-षडाम्नाय-गायत्री-चीनाचार-भूतिशुद्धि नामक छः तन्त्र-ग्रन्थों का संग्राहक। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में सन् 1981 में प्रकाशित।

(स) सात्वतसंहिता—— (पांचरात्र वैष्णवागम) अलशिंग भट्ट विरचित भाष्य तथा विस्तृत संस्कृत उपोद्घात के साथ सं. सं. वि. वि. ग्रन्थमाला में प्रकाशित । प्रथम संस्करण 1982 ई., द्वितीय 2001.

(र) तन्त्रयात्रा—— तन्त्रागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य, विचारविप्रुषः (बिन्दु) और यात्रावर्णन से संबद्ध 76 संस्कृत निबन्धों का संग्रह। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से प्रकाशित, सन् 1982 ई. ।

(र) आगममीमांसा—— वैष्णव, शैव और शाक्त आगमों का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण। दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) से सन् 1982 में प्रकाशित।

(र) लुप्तागमसंग्रह—— (द्वितीय भाग) विविध ग्रन्थों में उद्धृत अनुपलब्ध आगम-तन्त्रशास्त्र के वचनों का संग्रह । लगभग 400 ग्रन्थों और ग्रन्थकारों के ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि के परिचायक 220 पृ. के संस्कृत उपोद्घात के साथ। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र ग्रन्थमाला में सन् 1983 में प्रकाशित । उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

(र) आगम और तन्त्रशास्त्र—तन्त्रागम दर्शन और संस्कृति संबन्धी 26 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1984.

(स) नेत्रतन्त्र (मृत्युंजयभट्टारक)—क्षेमराज कृत उद्योत व्याख्या के साथ। विस्तृत हिन्दी उपोद्घात। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1985.

(स) वेदान्तसूत्र श्रीकण्ठभाष्य (चतुःसूत्री भाग)— अप्पय दीक्षित विरचित शिवार्कमणिदीपिका नामक व्याख्या के साथ। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1986 में प्रकाशित।

(स) गुह्यादि-अष्टसिद्धिसंग्रह— (बौद्ध तन्त्र)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी से सन् 1987 में विस्तृत हिन्दी उपोद्घात के साथ प्रकाशित। यहाँ पद्मवज्र की गुह्यसिद्धि, अनन्तवज्र की प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि, इन्द्रभूति की ज्ञानसिद्धि, लक्ष्मींकरा की अद्वयसिद्धि, योगिनी चिन्ता की व्यक्तभावानुगततवसिद्धि, डोबी हेरुक की सहजसिद्धि, कुद्दालपाद का अचिन्त्याद्वयक्रमोपदेश और पद्मवज्र (द्वितीय) की अद्वयविवरणप्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि नामक आठ ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है ।

(स) लिङ्गधारणचन्द्रिका—(वीरशैव) नन्दिकेश्वर शिवाचार्य विरचित। शरद् नामक संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद के साथ शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1988 में प्रकाशित ।

(अ) योगिनीहृदय—अमृतानन्द योगी विरचित संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद से संवलित। परिशिष्ट भाग में आदिनाथ विरचित परापंचाशिका समाविष्ट । मोतीलाल बनारसीदास, सन् 1988.

(स) ज्ञानोदयतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1988.

(स) अष्टप्रकरण—(सिद्धान्त शैव)। सं. सं. वि. वि. वाराणसी, सन् 1988. यहाँ सद्योज्योति शिवाचार्य विरचित तत्वत्रयनिर्णय, तत्वसंग्रह, भोगकारिका, मोक्षकारिका और परमोक्षनिरासकारिका नामक पाँच ग्रन्थों का, भट्ट रामकण्ठ और अघोरशिव की व्याख्या के साथ; श्रीकण्ठ सूरि कृत रत्नत्रय और भट्ट रामकण्ठ कृत नादकारिका का अघोरशिव कृत व्याख्या के साथ तथा भोजदेव कृत तत्वप्रकाश का दो टीकाओं के साथ प्रकाशन हुआ है।

(र) बौद्ध तन्त्र कोश—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(र) लुप्त बौद्ध वचन संग्रह—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) वसन्ततिलक—(बौद्ध तन्त्र) कृष्णपादविरचित। रहस्यदीपिका नामक व्याख्या के साथ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ से सन् 1990 में प्रकाशित ।

(स) डाकिनीजालसंवररहस्य—(बौद्ध तन्त्र) अनंगयोगी विरचित। दु. बौ. ग्र. शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(स) सम्पादन के सिद्धान्त और उपादान—(कार्यशाला विवरण) । दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) कृष्णयमारितन्त्र—(बौद्ध तन्त्र) । कुमारचन्द प्रणीत रत्नावली पंजिका नामक व्याख्या के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित ।

(स) महामायातन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), । रत्नाकरशान्ति प्रणीत गुणवती नामक टीका के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित।

(स) अभिसमयमंजरी—(बौद्ध तन्त्र) शुभाकर गुप्त विरचित। दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1993 .

(स) कालचक्रतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), पुण्डरीक विरचित विमलप्रभा नामक टीका सहित। दु.बौ.ग्र. शोधयोजना, सारनाथ द्वितीय भाग, सन् 1994; तृतीय भाग, सन् 1995.

(स) शु□लयजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता—अनन्तश्री स्वामी करपात्री महाराज द्वारा विरचित वेदार्थपारिजात नामक भाष्य से संवलित। श्री राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, वृन्दावन द्वारा प्रकाशित। द्वितीय-तृतीय अध्याय संवत् 2046; चतुर्थ-पंचम-षष्ठ अध्याय संवत् 2049; सप्तम से दशम अध्याय पर्यन्त, सं. 2049; एकादश से पंचदश अध्याय पर्यन्त, सं. 2048, षोडश से विंशति अध्याय पर्यन्त, सं. 2048 एवं 21 से 39 वें अध्याय पर्यन्त, संवत् 2048; ये सभी भाग हिन्दी भाषा में लिखित भाष्यनिष्कर्ष से संवलित हैं ।

(र) निगमागम संस्कृति—निगमागम दर्शन, साहित्येतिहास और यात्राविषयक 37 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 1992.

(अ) चन्द्रज्ञानागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) सूक्ष्मागम—(वीरशैव) क्रियापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) मकुटागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद आदि। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) पारमेश्वरागम—(वीरशैव) भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना । शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) उतरषट्क—(त्रिपुरा तन्त्र), कुलदीपिका नामक व्याख्या के साथ। सं.सं.वि.वि., वाराणसी, सन् 1995.

(र) निगमागमीय संस्कृति-दर्शन—निगमागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य और विचारविप्रुष:(बिन्दु) से संबद्ध 77 संस्कृत निबन्धों तथा टिप्पणियों का संग्रह। शो. प्र. ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी, वाराणसी, सन् 1995.

(स) भारतीय तन्त्रशास्त्र—(कार्यशाला का विवरण)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोधयोजना, केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) ज्ञानदीपविमर्शिनी—(त्रिपुरापद्धति), विद्यानन्द विरचित, परिशिष्ट आदि से संयुक्त। शो. प्र. ग्रन्थ माला, जंगम., वाराणसी सन् 1996 .

(अ) सिद्धान्तप्रकाशिका—(सिद्धान्त शैव) सर्वात्मशंभु विरचित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1996.

(स) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास—तन्त्रागम विषयक एकादश खण्ड, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, सन् 1997.

(र) भारतीय संस्कृति के नये आयाम—लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, सन् 1997.

(र) वैष्णवागमविमर्श—वैखानस, पांचरात्र और भागवत आगमों का परिचय, सं.सं.वि.वि. वाराणसी, सन् 1997.

(अ) सिद्धान्तसारावलि—(सिद्धान्त शैव) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित, व्याख्या-भाष्य-विस्तृत प्रस्तावना-परिशिष्ट सहित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1998.

(र) भारतीय दर्शन परिभाषा कोश, शाक्त दर्शन——(तृतीय खण्ड)। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार, नई दिल्ली, सन् 1999.

(अ) गुरुगीता, गुरुपादुकापंचक सहित—श्लोकानुवाद, भाषाभाष्य, परिशिष्ट से संवलित, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1999.

(अ) देवीकालोखरागम—(वीरशैव), निरंजनसिद्ध विरचित वृति-भाषानुवाद परिशिष्ट सहित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.

(स) सिद्धान्तशिखामणिमीमांसा—(शास्त्रसंगोष्ठी विवरण), शैव भारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.

(र) तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन——(दो खण्ड)। वैष्णव-शैव-शाक्त-बौद्ध-जैन-स्मार्त नामक तन्त्रागम शास्त्र की छः शाखाओं का ऐतिहासिक-दार्शनिक सांस्कृतिक विश्लेषण । शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2000-2001.

(स) साख्ययययोगमीमांसा—लेखक एवं अनुवादक, प्रो0 मुकुटबिहारी लाल, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2001.

(र) भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप—नैगमिक-आगमिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक विश्लेषण परक 38 निबन्धों का संग्रह, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2002.

(र) एक विश्व : एक संस्कृति—विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(र) भारतीय संस्कृति के मूल तत्व—16 संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(र) भारतीय दर्शन—सांख्य योग, वेदान्त, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.

(अ) वातुलशुद्धात्य तन्त्र—(वीरशैव), भाषाभाष्य-प्रस्तावना-परिशिष्ट संवलित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2004.

(र) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2004.

(अ) पंचवर्णमहासूत्रभाष्य—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.

(र) सर्वागम सार सर्वस्व—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.

(अ) शिवपञ्चविंशतिलोकशतक्रम- सन् 2005.

(र) भारत का सांस्कृतिक इतिहास- किशोर विद्यानिकेतन, वाराणसी (प्रेस में)

******

देश एवं विदेश के विद्वानों के प्रो० द्विवेदी के बारे में विचार एवं संमतियाँ

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के) योगतन्त्र विभाग में कार्य कर रहे या इसको छोड़कर गये हुए सभी व्यक्तियों में ये (पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी) ही एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनमें कि मेरे अनुसंधान सम्बन्धी दृष्टिकोण को सही रूप में समझने और उसको उचित पद्धति से कार्यान्वित करने की पूर्ण क्षमता है । इतना ही नहीं, मेरी दृष्टि में योगतन्त्र और आगम विषय पर कार्य कर रहे नई पीढ़ी के विद्वानों में ये योग्यतम व्यक्ति हैं।

महामहोपाध्याय प० गोपीनाथ कविराज
वाराणसी, २७-९-१९७०

मैंने ग्रन्थ (नित्याषोडशिकार्णव) आद्योपान्त पढ़ लिया है और आपके परिश्रम से बड़ा प्रभावित हुआ । ऐसे सामग्री और ऐसी भूमिका किसी पुस्तक में कभी नहीं देखी थी ।

लेफ्टिनेन्ट गवर्नर डॉ० आदित्यनाथ झा
दिल्ली, १ अप्रैल १९७०

ग्रन्थ (विज्ञानभैरव) के उपोद्घात में व्रजवल्लभ द्विवेदी ने आधुनिकता से ओत-प्रोत एक महत्त्वपूर्ण बात यह कही है कि किसी समय तान्त्रिक धर्म ने भारतीय संस्कृति को बुलन्दी पर पहुँचाया था । ...लेखक का आग्रह है कि गांधीवादी अथवा समाजवादी दर्शन में किसी योगविधि को नहीं अपनाया गया है, इसीलिये आज वे दिग्भ्रान्त हैं, रुग्ण हैं। भारतीय जनता तन और मन से बीमार है। आवश्यकता है योगशास्त्र के उपचार की । योगवासिष्ठ और विज्ञानभैरव जैसे ग्रन्थ इस अभाव को पूरी ईमानदारी से पूरा कर सकते हैं ।

आकाशवाणी, रायपुर

.... The introduction (to *Nityasodasikarnava*) is highly interesting piece of original research work (by Professor Vrajavallabha Dwivedi) in a field hardly accessible to modern academic scholarship....

Mahamahopadhyaya Pt. Gopinatha Kaviraja
Varanasi, 7 September, 1968

....Recent instances of a correct procedure in dealing with the written sources of Hindu Tantrism of the Sakta denomination are Carlstedt's studies on the KT-regrettably written in Swedish-and in another way, Dwivedi's edition of, and Sanskrit introduction into, the NST *(Nityasodasikarnava Tantra)* very useful.

Hindu Tantrism, p.4
Leiden : E. J. Brill, 1979

....Prof. Dwivedi, a well-known scholar and adept in the field of Tantrasastra, has very successfully done well justice to this Tantra (*Saktisangama Tantra*) in his learned introduction....

A. N. Jani
Director, Oriental Institute, Baroda
21 February, 1978

....In editing such rare text *(Vijnanabhairava)* painstakingly Pt. Dwivedi deserves special mention. His wide range of knowledge in the fields of Yoga and Tantra has made such a comparative estimate of the Saiva-agama text possible. The editor has shown his openmindedness. Undoubtedly, the present edition of the *Vijnanabhairava* has been a search light for an inquisitive mind.

N.K. Bose Memorial Foundation Newsletter
2 June, 1979

....Many of the important works on Yoga-Tantra produced by Sri Dwivedi are testimony to his sound grasp of the system. The present work (*Vijnanabhairava*) only adds on more feather to his cap.

Rtam
Lucknow

....This excellent edition (of Nityasodasikarnava, ed. by Vrajavallabha Dwivedi) is preceded by masterful introduction in Sanskrit which offers a succinct survey of the whole Tantric tradition.

Hindu Tantric Literature in Sanskrit (P. 60),
by T. Goudriaan (Holland).

....It (Satvata-samhita) is a contribution to scholarship of which you (Vrajavallabha Dwivedi) may be justly proud, and for which you will be remembered.

H. Daniel Smith
Professor of Religion
Syracuse University, New York

What is at present required from scholars of Tantrism is, in my opinion, the close study of single schools, on the basis of the published texts (where they exist) and, above all, the difficult work of editing what is preserved in manuscript form. Exemplary in this respect is the valuable work of Prof. Vrajavallabha Dwivedi, ex-Head of the Department of Yogatantra at the Sanskrit University of Varanasi, author of many editions of Tantric texts often accompanied by important introduction, capable as few others of moving with equal authority among the most diverse schools.

East and West, Roma
Vol. 33. 1983

....One should add that his numerous papers, and still more the excellent critical editions, he has made of such important texts as the Nityasodasikarnava, the Saktisangamatantra, part 4, the Satvatasamhita, and, most recently, the second volume of Luptagamasangraha (to mention only these four), together with the very learned and informative introductions in Sanskrit he wrote for these editions, are outstanding contributions to the domain of tantric studies.

Shree Vraj Vallabha Dwivedi is thus very well known, and very highly appreciated as a scholar in French indological circles (as well as, I happen to know, in corresponding circles in Great Britain, Germany and Holland.)

(Dr.) Andre Padoux
Director of Research in the
French Sentonal Centre for Scientific Research—-10.2.84

....Both Prof. Gnoli (formerly my teacher and now my colleague in the University of Rome) and I hold you in high esteem, as the best authority in the field of Tantric studies.

Dr. Raffable Torella
Universita, Degli Studi Di Roma La Sapienza,
Dipartimento Di Studi Orientali,
Facolta' Di Littere E Filosofia, 12-3-84

पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी द्वारा लिखित निगमागम संस्कृति नामक पुस्तक 37 निबन्धों का एक संकलन है। सभी निबन्ध भारतीय संस्कृति एवं भारतीय दर्शन के परिचायक है। प्रो० द्विवेदी उच्च कोटि के विद्वान् हैं। इस पुस्तक की रचना इनका अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

बी० सत्यनारायण रेड्डी, (राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, 1992)

धर्म और संस्कृति के इस विघटनकारी देश-काल में इस पुस्तक (एक विश्व : एक संस्कृति) का विशेष महत्त्व है। भारत की पुरानी विचारधारा को आधार बनाकर लेखक ने सचमुच ही एक विश्व की स्थापना की है। ..... यह पुस्तक भारतवासियों में आत्मविश्वास एवं दुनिया के अन्य लोगों का मार्ग प्रशस्त करती है। आशा है इस पुस्तक का गहरा स्वागत होगा।

प्रो० युगेश्वर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

'एक विश्व : एक संस्कृति' के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अतिशय उत्प्रेरक महत्त्वपूर्ण, अमूल्य सोद्देश्य विचार है, जिसका गुम्फन भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि, विख्यात तन्त्रागमवेत्ता, चिन्तक विद्वान् प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी ने अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक किया है। ..... 'एक विश्व : एक संस्कृति' वस्तुतः विशद आध्यात्मिक चिन्तन की पृष्ठभूमि पर विनिर्मित मानव मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनाओं की अद्वितीय विरासत है। आचार्य द्विवेदी जी ने भारतीय चिन्तन के आलोक में नाना धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृतियों का गहन विश्लेषण करके जो पदार्थ प्रस्तुत किया है, वह निःसन्देह मानवमात्र की कल्याणयात्रा का निर्दुष्ट पाथेय है।

डॉ० प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रवाचक, संस्कृत विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 26 जून, 2003 ई०

प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी योगशास्त्र के योग्यतम विद्वान है, उनके द्वारा लिखित 'विज्ञान भैरव' ग्रन्थ का मैने अध्ययन किया, यह तन्त्रशास्त्र का अद्वितीय ग्रन्थ है, इसकी तुलना अन्य ग्रन्थों से नहीं कि जा सकती।

डा. मर्रि चेन्नारेड्डी,
राज्यपाल उ.प्र. ,1978

प्रो० द्विवेदी जी जैसी तन्त्र साधन तथा विद्वता विश्व के गिने चुने व्यक्तियों में ही देखने को मिलती है, इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ तन्त्रशास्त्र लिये अतुलनीय है, भारतीय संस्कृति पर द्विवेदी जी की विचारधारा को अपनाना राष्ट्रहित में होगा।

नारायण दत्त तिवारी
मुख्यमंत्री, उत्तरांचल
25 जुलाई, 2002

प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी संस्कृत साहित्य एवं योग दर्शन के प्रकांण्ड विद्वान है इसके द्वारा लिखित ग्रन्थ एवं उनकी भूमिकाएँ सभी इस विषय के शाधार्थी के लिये अनुकरणीय होगा। विश्व पटल पर प्रो. द्विवेदी जी चकते सितारे है।

प्रो. विष्णुकांत शास्त्री
राज्यपाल उ.प्र.
2003

प्रो० द्विवेदी जी का ग्रन्थ एक विश्व एक संस्कृति विश्व में व्याप्त नफरत एवं युद्ध के समाधान की ओर हमें ले जाता है, यह ग्रन्थ धर्मनिरपेक्ष की सही व्याख्या करता है।

भौरो सिंह शेखावत
उपराष्ट्रपति
भारतीय गणराज्य,
जुलाई, 2003

◆◆◆◆◆◆